पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय महासमुंद (छ.ग.)

PM SHRI KENDRIYA VIDYALAYA MAHASAMUND (C.G.)

बाल सम्पदा

ई पत्रिका

सत्र-2024-25

SMT. P.B.S.USHA, DEPUTY COMMISSIONER KVS RO RAIPUR

Message…

It is worth appreciating that KV Mahasamund is bringing out its e-Vidyalaya Patrika for the year 2024-25. The e-Patrika is a window for all the myriad talents present in the students. It gives a vent to their feelings, thoughts and ideas. Through this issue of the Patrika the school has provided an opportunity to the students and the staff to let everyone bask in the fragrance of their creativity. In order to set very high standards, I call upon the Vidyalaya fraternity to strive hard with renewed vigour & enthusiasm to take the school to new heights of glory and achievements in the years to come towards the cause of education. I am sure that the Vidyalaya will strive for excellence in every facet of activity through dedicated hardwork. I extend my heartiest congratulations and best wishes to the Principal, Staff and the students of KV Mahasamund for bringing out its e-Vidyalaya Patrika for the year 2024-25.

SHRI RAVINDRA KUMAR,
ASSISTANT COMMISSIONER KVS
RO RAIPUR

It gives me immense pleasure to know that Kendriya Vidyalaya Mahasamund is publishing its e-Vidyalaya Patrika for session 2024-25.

The Vidyalaya Patrika is a forum where the activities and aspirations of the Vidyalaya are reflected. It gives an opportunity to budding writers to realize their creative abilities in e-form. Besides, it goes a long way in highlighting the activities of the institution round the year.

While appreciating your efforts in bringing out the Vidyalaya Patrika, I hope that it contributes more to the overall development of the student community.

I congratulate the students and the staff for their creative endeavour in bringing out the Vidyalaya Patrika successfully.

WITH BEST WISHES

संदेश

श्री विनय कुमार लंगेह
भा.प्र.से.
कलेक्टर एवं जिला दण्डाधिकारी
जिला महासमुंद (छ.ग)

//संदेश//

मुझे यह जानकर प्रसंन्नता हो रही है कि केंद्रीय विद्यालय महासमुंद वर्ष 2024–25 के लिए अपनी विद्यालय पत्रिका (बाल संपदा) प्रकाशित करने जा रही है।

विद्यालय पत्रिका विद्यार्थीयों को कविता चित्रकला कहानी आदि के माध्यम से अपनी रचनात्मक प्रतिभा प्रदर्शित करने के लिए मंच प्रदान करती है और इस प्रक्रिया में उसके संचार कौशल को निखारती है।

मै शैक्षणिक वर्ष 2023–24 के दौरान उत्कृष्ट परिणाम के लिए छात्रों, शिक्षण स्टाफ और प्राचार्य को बधाई देना चाहता हूँ। मै विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए उनके ईमानदारी और पूरे दिल से किए गए प्रयासों की भी सराहना करता हूँ ताकि वह हमारे देश के योग्य नागरिक बन सके।

मै इस पत्रिका को प्रकाशित करने में उनके सराहनीय प्रयासों के लिए प्राचार्य स्टाफ और संपादकीय बोर्ड को अपनी हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ।

विनय कुमार लंगेह
कलेक्टर एव अध्यक्ष
वीएमसी

प्रति,
श्री संजय कंसल
प्राचार्य
केन्द्रीय विद्यालय महासमुंद (छ.ग.)

Message…

It is a matter of great pleasure, pride and privilege that Kendriya Vidyalaya Mahasamund is bringing out its e-Vidyalaya Magazine for the session 2024-25. Indeed, the Vidyalaya Magazine is a culmination of the creativity, ingenuity and concerted efforts by the students and the teachers in equal measure. I hope the astute guidance of the teachers, creativity, imaginativity and orgionality of the students of the vidyalaya must have found an appropriate place in the magazine.

I extend my good wishes to the board of the editors, teachers, directly or indirectly involved in this venture of theirs.

SHRI SANJAY KANSAL
PRINCIPAL
PM SHRI KENDRIYA VIDYALAYA
MAHASAMUND (C.G.)

संदेश...

यह अत्यंत हर्ष का विषय है,कि हमारे केंद्रीय विद्यालय महासमुंद द्वारा इस वर्ष भी ई-पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है | इसके लिए विद्यालय के प्राचार्य महोदय, समस्त शिक्षकों,पालकों और विद्यार्थियों को अपनी बधाई व शुभकामनाएँ प्रेषित कर रही हूँ | आज केंद्रीय विद्यालय महासमुंद पूरी तरह से विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में तत्पर है | हम विद्यार्थियों के शैक्षणिक, शारीरिक और मानसिक विकास को लेकर संकल्पित हैं | यह पत्रिका इन भावों के साथ विद्यालय के विभिन्न उपलब्धियों को प्रदर्शित करेगा | विद्यार्थियों के विभिन्न कला, योग्यता और क्षमता को स्थान मिला है | इससे विद्यार्थियों के अंदर नई ऊर्जा का संचार होगा और सभी बेहतर करने के लिए प्रयत्नशील होंगे | यह पत्रिका हमारी सृजनात्मकता, कर्मठता, लगनशीलता के भाव को प्ररिलक्षित करेगा | प्राचार्य महोदय को विशेष बधाई व धन्यवाद प्रकट करती हूँ कि जिनके मार्गदर्शन और निर्देशन में विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए पूरी तन्मयता से जुटे हैं | शुभकामनाओं के साथ......

SMT. KANTA EKKA
HEADMISTRESS
PM SHRI KENDRIYA VIDYALAYA
MAHASAMUND (C.G.)

संपादकीय

विद्यालय पत्रिका विद्यार्थीयों की साहित्यिक सृजनात्मकता, वैचारिक चिंतन एवं लेखन प्रतिभा को प्रतिबिंबित करने का सशक्त माध्यम है। इसमे विद्यालय की वर्षभर की विभिन्न शैक्षणिक और गैर-शैक्षणिक उपलब्धियों एवं गतिविधियों की झलक मिलती है। विद्यार्थी अपने मौलिक विचार कविता, लेख, चित्रकला आदि के माध्यम से व्यक्त करते है।

पत्रिका प्रकाशन के लिए ऊर्जावान एवं दूरदर्शी प्राचार्य श्री संजय कंसल के प्रति हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ जो समय-समय पर कुशल मार्गदर्शन देते रहे है। उनकी प्रेरणा और अथक प्रयास के परिणामस्वरूप ही यह पत्रिका प्रकाशित हो सकी है।

प्रेरणास्पद संदेश प्रेशित करने के लिए कलेक्टर महोदय और संगठन के सभी अधिकारियों के प्रति हृदय से आभार..........

अंत में सभी विद्यार्थीयों, कंप्युटर विभाग, अध्यापकगण एवं संपादक मण्डल के सदस्य धन्यवाद के पात्र है जिन्होंने प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से पत्रिका के प्रकाशन में अपना अमूल्य सहयोग प्रदान किए।

विद्यालय पत्रिका सुधी पाठकों के समक्ष इस आशा से प्रस्तुत कर रहे है कि-

संत हँस गुण गहहि पय, परिहरी बारि बिकार।

दशरथ राम यादव
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (हिन्दी)

Message…

Dear readers

Through immense hard work an endeavour of students and teachers Kendriya Vidyalaya Mahasamund is publishing its e-patrika 2024-25. Like every year this year also our school is presenting a colourful picture of thoughts and creativity. It is a great pleasure in placing this magazine in front of you all. It has been said "Reading maketh a full man". So as to quench the thrust of all the bibliophiles we have tried to marshal the creation and notion of the students themselves. There is no doubt that creativity is the most important human resource of all. Without creativity, there would be no progress, and we would be forever repeating the same pattern. The sincere efforts put in by the students, teachers, CCA department and computer department under the guidance of our respected principal Sir have played a crucial role in making this magazine possible. I hope you all will enjoy the articles envisioned by the creators. Thank you

MR. OMPRAKASH CHANDRAKER
PRIMARY TEACHER
PM SHRI KENDRIYA VIDYALAYA
MAHASAMUND (C.G.)

ई-पत्रिका संपादन समिति
सत्र 2024-25

1. श्री दशरथ राम यादव-प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (हिंदी)

2. श्री सुरेश कुमार सिंह-स्नातकोत्तर शिक्षक (अंग्रेजी)

3. श्री गजाधर मिश्रा- प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (संस्कृत)

4. श्री ओमप्रकाश चंद्राकर- (प्राथमिक शिक्षक)

5. श्रीमती सोनिया-(प्राथमिक शिक्षिका)

6. श्रीमती विजेता छील्लर- (प्राथमिक शिक्षिका)

पीएमश्री केंद्रीय विद्यालय महासमुंद (छ.ग.)
(समस्त स्टाफ)
सत्र-2024-25

हिंदी विभाग

Hindi Department

स्वच्छता

संकल्प करो या करो विचार,
बन्द करो अब भ्रष्टाचार,
दुनिया में इसके दुष्परिणाम,
आओ मिलकर करें स्वच्छ भारत निर्माण ।।

अगर हम ठान ले,
अगर हम मान ले,
स्वच्छ भारत हो अपना,
तो पुरा होगा हर एक सपना।।

गन्दगी फैलाना आसान है,
पर स्वच्छता मेरा अभीमान है,
अगर गान्धी फैलाओगे,
तो बिमारी उसका परिणाम है।।

स्वच्छता के लिए हर संभव कोशिश कर जायेंगे, भारत को
स्वच्छ बनाएँगे ।।

महक वर्मा
(कक्षा 7 वी "ब")

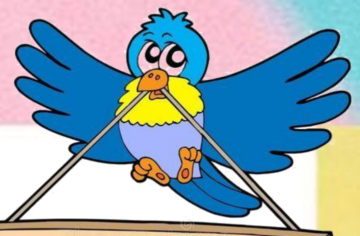

कुंभ: एक आध्यात्मिक यात्रा

कुंभ, एक ऐसा त्योहार जो हर 12 साल में चार पवित्र स्थानों - प्रयागराज, हरिद्वार, नासिक और उज्जैन में आयोजित किया जाता है। यह त्योहार समुद्र मंथन की पौराणिक घटना के उपलक्ष्य में मनाया जाता है, जहां इन स्थानों पर अमृत की बूंदें गिरी थीं।

कुंभ का अर्थ है "कलश" या "पात्र", जो अमृत की बूंदों को संग्रहीत करने के लिए उपयोग किया जाता था। यह त्योहार लोगों को अपनी आध्यात्मिक जड़ों से जुड़ने का अवसर प्रदान करता है। भक्त, संत और ऋषि अनुष्ठान करने, ध्यान करने और आध्यात्मिक ज्ञान साझा करने के लिए एकत्रित होते हैं।

कुंभ की मुख्य विशेषता है पवित्र स्नान, जो पवित्र नदियों में डुबकी लगाने की प्रक्रिया है। ऐसा माना जाता है कि इससे आत्मा शुद्ध होती है और आध्यात्मिक आशीर्वाद मिलता है। कुंभ के दौरान, लोग पवित्र स्नान करने के लिए नदियों के किनारे एकत्रित होते हैं।

कुंभ का महत्व केवल धार्मिक नहीं है, बल्कि यह एक सांस्कृतिक उत्सव भी है। यह त्योहार लोगों को अपनी संस्कृति और परंपराओं से जुड़ने का अवसर प्रदान करता है। कुंभ के दौरान, लोग पारंपरिक नृत्य, भक्ति गीत और आध्यात्मिक प्रवचन में भाग लेते हैं।

आलिया वर्मा
(कक्षा 7 वी "ब")

हमें आजादी दिलाने के लिए कई स्वतंत्रता सेनानियों ने अपनी जान गंवा दी. कई फांसी के फंदे चूमे और कई अंग्रेजों की बर्बरता का शिकार हुए। आज हम ऐसे ही 5 फ्रीडम फाइटर्स की कहानी बताने जा रहे हैं, जिन्होंने देश के लिए अपनी जान कुर्बान कर दी. इनमें किसी की उम्र 22 साल तो किसी की सिर्फ 23 साल थी।

1. मंगल पांडे

स्वतंत्रता संग्राम के पहले हीरो मंगल पांडे का जन्म उत्तर प्रदेश के बलिया के नगवा गांव में हुआ था. 1849 में महज 22 साल के मंगल पांडे ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की सेना में शामिल हुए. वह पश्चिम बंगाल के बैरकपुर छावनी में 34वीं बंगाल नेटिव इन्फैंट्री में सैनिक थे. जहां गाय और सुअर की चर्बी वाली राइफल की कारतूसों का इस्तेमाल शुरू किया गया था. 9 फरवरी 1857 को मंगल पांडे ने इन कारतूस के इस्तेमाल से इनकार कर दिया।

ये बात अंग्रेजी हुकूमत को पसंद नहीं आई. 29 मार्च 1857 को अंग्रेज अफसर मेजर ह्यूसन मंगल पांडे का राइफल छीनने की कोशिश की और मंगल पांडे ने उन्हें मार डाला. अंग्रेज अधिकारी लेफ्टिनेन्ट बॉब भी मंगल पांडे के सामने नहीं टिक पाए. यहीं से मंगल पांडे ने अंग्रेजों के खिलाफ जंग छेड़ दी. 8 अप्रैल 1857 को 30 साल के मंगल पांडे को फांसी दे दी गई।

2. भगत सिंह।

भगत सिंह का नाम बच्चा-बच्चा जानता है. 28 सितंबर, 1907 को उनका जन्म पंजाब के लायलपुर जिले के बंगा में हुआ था. महज 23 साल की उम्र में भगत सिंह देश की आजादी के खातिर फांसी पर चढ़ गए थे. दरअसल, जलियांवाला बाग हत्याकांड ने भगत सिंह को अंदर तक हिला डाला था. उन्होंने लाहौर के नेशनल कॉलेज की पढ़ाई छोड़कर नौजवान भारत सभा शुरू की और आजादी की लड़ाई में कूद गए.।

1922 में चौरी चौरा कांड में महात्मा गांधी का साथ न मिलने के बाद वे चंद्रशेखर आजाद के गदर दल में शामिल हुए. काकोरी कांड में राम प्रसाद बिस्मिल समेत चार क्रांतिकारियों को फांसी और 16 को आजीवन कारावास होने के बाद भगत सिंह ने राजगुरु के साथ मिलकर 1928 में लाहौर में सहायक पुलिस अधीक्षक रहे जेपी सांडर्स को मार डाला.।

फिर बटुकेश्वर दत्त के साथ मिलकर नई दिल्ली में ब्रिटिश भारत की तत्कालीन सेंट्रल एसेंबली के सभागार में बम फेंकते हुए क्रांतिकारी नारे लगाए. भागने की बजाय उन्होंने अपनी गिरफ्तारी दी. 'लाहौर षड़यंत्र' का उन पर मुकदमा चला और 23 मार्च, 1931 की रात फांसी दे दी गई. तब उनकी उम्र सिर्फ 23 साल थी.।

3. चंद्रशेखर आजाद।

चंद्रशेखर आजाद का जन्म 23 जुलाई, 1906 को मध्यप्रदेश के अलीराजपुर जिले के भाबरा में हुआ था. 14 साल की उम्र में आजाद बनारस आ गए और संस्कृत पाठशाला में पढ़ाई की. यहीं उन्होंने कानून भंग आंदोलन में हिस्सा लिया. 1920-21 में आजाद गांधीजी के असहयोग आंदोलन से आजाद जुड़े और 1926 में काकोरी ट्रेन कांड, फिर वाइसराय की ट्रेन को उड़ाने की कोशिश, 1928 में लाला लाजपत राय की मौत का बदला लेने सॉन्डर्स पर गोली चलाई।

27 फरवरी, 1931 को तब इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क में क्रांतिकारी साथियों से चर्चा कर रहे थे, तभी सीआईडी एसएसपी नॉट बाबर वहां पहुंचा और पुलिस फोर्स के साथ चंद्रशेखर आजाद पर गोली चलाई. इसमें आजाद ने तीन पुलिसवालों को मार गिराया लेकिन जब आखिरी गोली बची तो अंग्रेजों के हाथ आने की बजाय खुद को गोली मार ली. तब उनकी उम्र सिर्फ 25 साल थी।

4. राजगुरु

शिवराम हरि राजगुरु का जन्म 24 अगस्त 1908 में पुणे के खेड़ा गांव में हुआ था. उन्हें लोग राजगुरु के नाम से जानते हैं. 6 साल की उम्र में पिता के निधन के बाद बनारस आकर संस्कृत की पढ़ाई की. यहीं चंद्रशेखर आजाद के हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन से जुड़े और अंग्रेज अफसर सॉन्डर्स की हत्या में शामिल हुए. असेंबली में बम ब्लास्ट करने में भगत सिंह के साथ राजगुरु भी शामिल हुए और 23 मार्च 1931 को 23 साल की उम्र में उन्हें भगत सिंह और सुखदेव के साथ फांसी दे दी गई।

5. सुखदेव

सुखदेव थापर का जन्म पंजाब के लुधियाना में 15 मई 1907 में हुआ था. जन्म से तीन महीने पहले ही उनके पिता का निधन हो गया था. सुखदेव लाला लाजपत राय से प्रभावित होकर उन्हीं की मदद से चंद्रशेखर आजाद की टीम का हिस्सा बने. लाला लाजपत राय की मौत का बदला लेने के लिए उन्होंने अंग्रेज अफसर सॉन्डर्स को मारने वाले क्रांतिकारियों में शामिल हुए. सुखदेव ने राजनीतिक बंदियों के साथ हो रहे दुर्व्यवहार के खिलाफ भी आंदोलन चलाया. 23 मार्च 1931 को भगत सिंह, राजगुरु के साथ उन्हें भी फांसी दे दी गई. तब उनकी उम्र सिर्फ 23 साल थी.।

विशाल

(कक्षा 7 वी "ब")

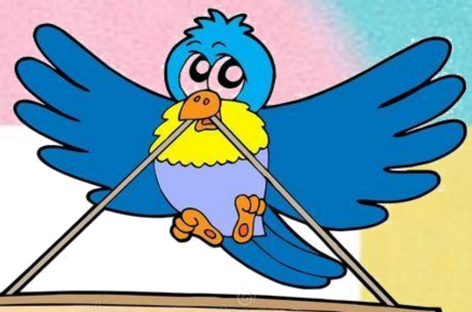

हम जग में नाम कमाएंगे

है शौक यही,अरमान यही,हम
कुछ करके दिखलाएंगे।
मरने वालों की दुनिया में हम,
अमरों में नाम लिखाएंगे।
जो लोग गरीब भिखारी हैं,हम
उनको सुखी बनाएँगे।
जो लोग अँधेरे घर में हैं, उद्यम का
दीप जलाएंगे।
रोको मत आगे बढ़ने दो, आजादी
के रखवाले हैं।
हम मातृभूमि की सेवा में,अपना
सर्वस्व लगाएंगे।
हम उन वीरों के बच्चे हैं,जो धुन के
पक्के सच्चे थे।
हम उनका मान बढ़ाएंगे, हम जग
में नाम कमाएंगे।

गौरिका चंद्राकर
(कक्षा 1ली "अ")

धोबी और गधा की कहानी

एक बहुत गरीब धोबी था। उसके पास एक गधा था जो बहुत कम चारा खिलाने के कारण बहुत कमजोर हो गया था। गरीबी के कारण उसको पर्याप्त भोजन नही खिला पाता था।

एक दिन जंगल जाते समय रास्ते में मरा हुआ बाघ मिला , उसने योजना बनाया कि इस बाघ के खाल को गधे के उपर लगा दूंगा और दूसरे के खेतों में चारा चरने छोड़ दिया करूंगा और किसान गधे को सचमुच का बाघ समझकर डरकर भाग जाएेंगें और गधा बड़े आराम से खेत से चारा चर लेगा ।

अपने इस योजना पर अमल करने लगा और उसका योजना काम आने लगा था।

एक दिन गधा खेत में चारा चर रहा था तब उसे दूसरे गधे की रेंगने की आवाज सुनाई दिया और वह भी जोर जोर से रेंगने लगा ।

गधे की रेंगने की आवाज सूनकर किसान को गधे की असिलियत का पता चल गया कि वह बाघ नही है ,वह एक गधा है , तो उसने गधे की खूब पिटाई की ।

इसलिए अपनी सच्चाई कभी भी नही छुपाना चाहिए ।

जतिन प्रजापति
(कक्षा 3री "ब")

एक छोटे से गाँव की कहानी

एक छोटे से गाँव में एक गरीब परिवार रहता था। परिवार में एक लड़का था जिसका नाम रोहन था। रोहन के माता-पिता दोनों अनपढ़ थे, लेकिन वे चाहते थे कि उनका बेटा पढ़ाई करे और एक अच्छा इंसान बने।

रोहन ने गाँव के स्कूल में दाखिला लिया और पढ़ाई शुरू की। वह बहुत मेहनती था और जल्द ही उसने अपने शिक्षकों और साथियों का ध्यान आकर्षित किया।

रोहन ने अपनी पढ़ाई पूरी की और शहर में एक अच्छे कॉलेज में दाखिला लिया। वहां उसने इंजीनियरिंग की पढ़ाई की और एक अच्छा इंजीनियर बन गया।

रोहन ने अपने गाँव में वापस आकर एक स्कूल खोला और गरीब बच्चों को मुफ्त में पढ़ाना शुरू किया। उसने अपने गाँव को एक अच्छा और शिक्षित गाँव बनाने का संकल्प लिया।

रोहन की कहानी हमें यह सिखाती है कि शिक्षा कितनी महत्वपूर्ण है। शिक्षा हमें ज्ञान, समझ और सशक्तिकरण प्रदान करती है। यह हमें अपने सपनों को पूरा करने और अपने समाज को बेहतर बनाने में मदद करती है।

इसलिए, बेटा, तुम्हें भी अपनी पढ़ाई पर ध्यान देना चाहिए और अपने सपनों को पूरा करने के लिए मेहनत करनी चाहिए।

सार्थक भारतद्वाज
(कक्षा 6वी "ब")

दोस्ती का रिश्ता

एक बार एक बंदर को उदासी के कारण मरने की इच्छा हुई,
तो उसने एक सोते हुए शेर के कान खींच लिये।
*शेर उठा और गुस्से से दहाड़ा-
"किसने किया ये..? किसने अपनी मौत बुलायी है..?"
बंदर :- मैं हूँ महाराज, दोस्तों के अभाव में अत्यधिक उदास हूँ,
मरना चाहता हूँ,
आप मुझे खा लीजिये।
शेर ने हँसते हुए पूछा-
" मेरे कान खींचते हुए तुम्हें किसी ने देखा क्या..?"
बंदर : - नहीं महाराज...
शेर: ठीक है, एक दो बार और खींचो, बहुत ही अच्छा लगता है.!!
*सार
अकेले रह-रहकर जंगल का राजा भी बोर हो जाता है।
इसलिए अपने दोस्तों के संपर्क में रहें, कान खींचते खिचाते रहे, पंगा लेते रहें...।
सुस्त न रहें
मस्ती करते रहें..!
दोस्तों से रिश्ता रखा करो जनाब..!!
तबियत मस्त रहेगी।
ये वो हक़ीम हैं
जो अल्फ़ाज़ से ही इलाज कर दिया करते हैं।

देव्यांश यादव
(कक्षा 3री "ब")

जीवन शेष है

मत हो निराश तू,
मत छोड़ आश तू,
अपने पर कर विश्वास तू,
अपनेआप मे है ,खाश तू,
यहीं जीवन की परिवेश है!
यहीं समझ "जीवन शेष है "!!

हाथों की लकीर तू है,
सोचे तो गरीब-अमीर तू है,
तू ही दाता है-फकिर तू है,
आत्मविश्वाश रख तकदीर तू है,
क्यों करता किसी से द्वेष है?
यही समझ "जीवन शेष है "!!

वहीं कर जो तेरे जी को भाये,
तूझको पसंद चाहे धूप या छाये,
दुनिया से लड़ने कि हिम्मत रख,
अपने मुट्ठी मे अपनी किस्मत रख,
शून्य से कार्य का श्री गणेश है!
यही समझ "जीवन शेष है"!!

ऐसा क्या है? जो तू कर नहीं सकता,
संकल्प से बढ़कर कूछ नहीं हो सकता,
मत सून जमाने की चुगलियाँ ,
उठाने दे तूझ पर उँगलियाँ,
बनावटी है राशीयाँ तूला या मेश है!
यहीं अंतिम सत्य है "जीवन शेष है "!

उनको क्या पता तूझमें जो विशेष है!
कहाँ तक सोचेंगे वो आखिर "जीवन शेष है" ?

कनिष्का पी डनसना
(कक्षा 4थी "ब")

खरगोश और सियार की कहानी

एक समय की बात है , एक जंगल में एक बहुत बड़े पेड़ के तने में एक खोल था। उस खोल में एक ततेर नाम का एक तीतर रहा करता था। हर रोज वह खाना ढुंढने खेतों में जाया करता था, और शाम को तीतर लौट कर खोल में आता था। एक दिन तीतर खाना ढुंढते हुए अपने दोस्तों के साथ बहुत दूर खेत में निकल गया और शाम तक खोल में नहीं लौटा, वापस आते समय वह मार्ग से भटक गया और कुछ दिनों तक अपनी खोल तक नहीं पहुंच पाया जब कुछ दिनों के बाद तीतर वापस नहीं आया, तो उस खोल में एक खरगोश ने अपना घर बना लिया और वहीं रहने लगा। लगभग दो से तीन हफ्तों बाद तीतर वापस आया। वह खा- पीकर वह बहुत मोटा हो गया था और लंबे सफर के कारण बहुत थक भी गया था। लौट कर उसने देखा कि उसके घर में खरगोश रह रहा है। यह देख कर उसे बहुत गुस्सा सा आ गया और उसने झल्लाकर खरगोश से कहा, "ये मेरा घर है। यहां से निकलो, यहां कैसे आ गए। " तीतर को इस तरह चिल्लाते हुए देख खरगोश को भी गुस्सा आ गया और उसने कहा, "कैसा घर.? कौन सा घर.? जंगल का नियम है कि जो जहां रह रहा है, वही उसका घर है। तुम यहां रहते थे, लेकिन अब यहां मैं रहता हूं, और इसलिए यह मेरा घर है।

प्रकृति चन्द्राकर
(कक्षा 4थी "अ")

"इस तरह दोनों के बीच बहस शुरू हो गई। तीतर बार-बार खरगोश को घर से निकलने के लिए कह रहा था और खरगोश अपनी जगह से टस से मस नहीं हो रहा था। तब तीतर ने कहा कि इस बात का फैसला हम किसी तीसरे से करने देते हैं। उन दोनों की इस लड़ाई को दूर से एक सियार देख रही थी। उसने सोचा कि अगर फैसले के लिए ये दोनों मेरे पास आ जाएं ,तो मुझे इन्हें खाने का अच्छा अवसर मिल जाएगा। यह सोच कर वह पेड़ के नीचे ध्यान मुद्रा में बैठ गई, और जोर-जोर से ज्ञान की बातें करने लगी। उसके बातों को सुनकर तीतर और खरगोश ने बोला कि यह कोई ज्ञानी लगती है और हमें फैसले के लिए इसके पास ही जाना चाहिए। उन दोनों ने उसके पास जाकर सियार से कहा, " सुनो मौसी, तुम समझदार लगती हो। हमारी मदद करो और जो भी दोषी होगा, उसे तुम खा लेना।" कुटिल सियार ने कहा हा, "अब मैंने हिंसा का रास्ता छोड़ दिया है, लेकिन मैं पुरी बात सुनकर ही मदद करूंगी पर समस्या यह है कि मैं अब बूढ़ी हो गई हूं, और इतने दूर से मुझे कुछ सुनाई नहीं दे रहा है। जरूरत है तो तुम दोनों मेरे पास आ सकते हो?

"उन दोनों को सियार की बात पर भरोसा हुआ, और वे उसके पास चले गए। जैसे ही वो उसके पास गए, सियार ने तुरंत पंजा मारा और एक ही झपट्टे में दोनों को मार डाला।

सीख:- किसी भी दुष्ट और अनजान पर भरोसा नहीं करना चाहिए।

अनंत कुमार बंजारे
(कक्षा 3री "ब")

आ-रे बादल

आ-रे बादल आ-रे आ
ठण्डी ठण्डी जल बरसा
बादल तू पूरब से आ
बादल तू पश्चिम से आ
बादल तू उत्तर से आ
बादल तू दक्षिण से आ
आ-रे बादल आ-रे आ
ठण्डी ठण्डी जल बरसा
उमड़-घूमडकर तू छा जा
ऊपर से धरती पर आ
रिमझिम रिमझिम जल बरसा
धरती को जल्दी सरसा
आ-रे बादल आ-रे आ
ठण्डी ठण्डी जल बरसा

नीरज देवांगन
(कक्षा 3री "ब")

शेर और चूहा की कहानी

जब एक शेर जंगल में आराम कर रहा था, तो एक चूहा मनोरंजन के लिए उसके शरीर पर ऊपर-नीचे दौड़ने लगा। शेर की नींद टूट गई और वह गुस्से से जाग उठा। शेर चूहे को खाने ही वाला था कि चूहे ने उससे जाने देने की विनती की। “मैं आपको विश्वास दिलाता हूं, अगर आप मुझे बचाएंगे तो मैं भविष्य में आपकी बहुत मदद करूंगा।” शेर चूहे के आत्मविश्वास पर हँसा और उसे आज़ाद कर दिया।

कुछ दिन बाद दिन शिकारियों का एक समूह जंगल में पहुंचा और शेर को पकड़ लिया गया। उन्होंने उसे एक पेड़ से बांध दिया। बाहर निकलने के लिए संघर्ष करते हुए शेर दहाड़ने लगा। जल्द ही, चूहा वहां से गुजरा और उसने शेर को परेशानी में देखा। वह शेर को छुड़ाने के लिए रस्सियों को काटने लगा और दोनों तेजी से जंगल में चले गए।

कहानी का सार: हमेशा एक- दूसरे के प्रति दयालु रहें।

निशिता
(कक्षा 4थी ”ब”)

सपना और चिटियां

एक समय की बात है। एक गांव में एक लड़की रहती थी, जिसका नाम सपना था। उसके घर के पास चिटियों का बिल था। एक दिन सपना चिटियों का बिल तोड़ना चाहती थी। उसके बाद चिटियों ने उसकी बात सुन ली सब चिटियां, रानी चिटी के पास गई। उससे बोली सपना हमारी घर तोड़ना चाहती है, फिर सभी चिटियां सपना के पास गए। सभी चिटियां सपना से बोली कि आप हमारे घर मत तोड़ों हम हर रविवार को आपको सोने की चिटीं देंगे। फिर सपना बोली अगर ऐ चिटीं मुझे काट लेंगी तो, सभी चिटियां सपना से बोली ऐ सोने की चिटीं है इसलिए नहीं काटेंगी।अब आप हमारे घर मत तोड़ों। सपना चिटियों की बात मान ली और उसने घर को नहीं तोड़ा।

सीख- इस संसार में सभी जीव -जंतु अपनी सुरक्षा को महत्व देते हैं।

दीक्षा कोसरिया
(कक्षा 3री "ब")

मेरा स्कूल

मेरा स्कूल है बहुत ही प्यारा
ज्ञान का यहां भंडार है सारा
हम बच्चो को शिक्षा देकर
स्कूल बनाती भविष्य हमारा
पढ़ना लिखना खेलना कूदना
सब कुछ यहां है ढेर् सारा
नीति शिक्षा का पाठ पढ़ा कर
स्कूल ने बच्चो का जीवन संवारा
जितना सीखे उतना कम है
विद्या का है सागर न्यारा
जीवन मे हमको काम जो आए
ऐसा ज्ञान स्कूल देती सारा
जीवन पथ पर आगे बढ़ाती
ऊँचे शिखर पर हमे ले जाती
इसके बिना है बचपन अधूरा
स्कूल से होगा भविष्य सुनहरा

आरव साहू
(कक्षा 3री "ब")

मेरा केंद्रीय विद्यालय, एक सपनों का स्थल,
जहां ज्ञान की बातें सिखाई जाती हैं।
शिक्षकों की बातें सुनने को मिलती हैं,
जीवन की राह पर चलने के लिए।
मेरा केंद्रीय विद्यालय, एक खुशियों का घर,
जहां मित्रों के साथ खेलना और हंसना है।
पुस्तकालय में किताबें पढ़ने को मिलती हैं,
ज्ञान की बातें सीखने के लिए।
मेरा केंद्रीय विद्यालय, एक सुरक्षित और स्वच्छ स्थल,
जहां शिक्षा और अनुशासन का पालन किया जाता है।
शिक्षकों की देखरेख में हम सीखते हैं,
जीवन की राह पर चलने के लिए।
मेरा केंद्रीय विद्यालय, एक यादगार स्थल,
जहां बचपन की खुशियाँ और यादें बनती हैं।
मैं अपने विद्यालय को कभी नहीं भूलूंगा,
यह मेरे जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

पूर्वांश साहू
(कक्षा 3री "अ")

विद्यालय मेरा प्यारा है ,
सारे जहां से न्यारा है ।
शिक्षक हमें सिखाते हैं,
ज्ञान का पाठ पढ़ाते हैं ।
रोज स्कूल हम जाते हैं,
दोस्त खूब हंसाते हैं ।
विद्यालय में हम पढ़ते हैं,
अपना जीवन गढ़ते हैं।
विद्यालय में सीखते हैं,
नित आगे – आगे बढ़ते हैं ।

लुभ्या निषाद
(कक्षा 3री "अ")

स्कूल

कितना सुन्दर है स्कूल
इसमें रंग -बिरंगे फूल।
फूल सुहाने सब के भाते
उन्हें देखकर सब ललचाते।
टीचर हमको पाठ पढ़ती
नई-नई बातें सिखलाती।
फूलों से गिनती करवाती
टॉफी देकर हमें खिलाती ।

(कक्षा 3 "अ")

स्कूल पढ़ने जाएंगे

नन्हे मुन्हे बच्चे हम,
स्कूल पढ़ने जाएंगे।
अ ,आ, इ, ई पढ़कर हम,
ज्ञान की दीप जलाएंगे।

पापा मुझे स्कूल है जाना,
पढ़ लिख कर नाम कमाना।
मोजा –जूता,पेंसिल बॉक्स,
टाई, बेल्ट हो मेरे पास।
पढ़ाई के सारे वस्तु को लाना,
बनठन कर मुझे स्कूल जाना।

मम्मीजी मुझे तैयार कर दो,
कॉपी ,पुस्तक बैग भर दो।
अपनी ममता की आँचल कर दो,
आशीष देकर मुझको वर दो।

नन्हे मुन्हे बच्चे हम,
स्कूल पढ़ने जाएंगे ।
पढ़ लिखकर हम सब,
ज्ञान की दीप जलाएंगे।

प्रकृति चन्द्राकर
(कक्षा 4थी "ब")

घमण्ड का सिर नीचा

एक गांव में उज्ज्वलक नाम का बढ़ई रहता था। वह बहुत गरीब था। ग़रीबी से तंग आकर वह गांव छोड़कर दूसरे गांव के लिए चल पड़ा। रास्ते में घना जंगल पता था। वहां उसने देखा कि एक ऊंटनी प्रसवपीड़ा से तड़फड़ा रहीं हैं। ऊंटनी ने जब बच्चा दिया तो वह ऊंट के बच्चे और ऊंटनी को लेकर अपने घर आ गया। वहां घर के बाहर ऊंटनी को खूंटी से बांध कर उसके खाने के लिए पत्तों भरी शाखाएं काटने वन में गया। ऊंटनी ने हरी हरी कोमल कोपलें खाईं। बहुत दिन इसी तरह हरे-हरे पत्ते खाकर ऊंटनी स्वस्थ और पुष्ट हो गई। ऊंट का बच्चा भी बढ़कर जवान हो गया। बढ़ई ने उसके गले में एक घण्टा बांध दिया,जिससे वह कहीं खो ना जाए। दूर से ही उसकी आवाज़ सुनकर बढ़ई उसे घर ले आता था। ऊंटनी के दूध से बढ़ई के बाल बच्चे भी पलते थे। ऊंट भार ढोने के भी काम आने लगा।

उस ऊंट- ऊंटनी से ही उसका व्यापार चलता था। यह देख उसने एक धनिक से कुछ रुपया उधार लिया और गुर्जर देश में जाकर वहां से एक और ऊंटनी ले आया। कुछ दिनों में उसके पास अनेक ऊंट ऊंटनिया हो गईं। उनके लिए रखवाला भी रख लिया गया। बढ़ई का व्यापार चमक उठा। घर में दूध की नदियां बहने लगीं।

शेष सब तो ठीक था किन्तु जिस ऊंट के गले में घण्टा बांधा था, वह बहुत गर्वित हो गया था। वह अपने को दूसरों से विशेष समझता था। सब ऊंट वन में पत्ते खाने को जाते तो वह सबको छोड़कर अकेला ही जंगल में घूमा करता था।

उसके घण्टे की आवाज़ से शेर को पता लग जाता था कि ऊंट किधर है। सबने उसे मना किया,वह गले से घण्टा उतार दे, लेकिन वह नहीं माना।

एक दिन जब सब ऊंट वन में पत्ते खाकर तालाब में पानी पीने के बाद गांव की ओर वापस आ रहे थे तब वह सबको छोड़कर जंगल की सैर करने अकेला चल दिया। शेर ने भी घण्टे की आवाज़ सुनकर उसका पीछा किया। और जब वह वापस आया तो उस पर झपटा मारा और उसे मार दिया।

इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है -:

* हमें घमंड नहीं करना चाहिए।
* हमें अपने आप को दूसरों से बड़ा नहीं समझना चाहिए।
* हमें बड़ों की बात मान लेनी चाहिए।

साक्षी चंद्राकर
(कक्षा 7वी "ब")

लक्ष्य

एक मेढक पेड़ की चोटी पर चढ़ने का सोचता है और आगे बढ़ता है बाकी के सारे मेंढक शोर मचाने लगते हैं "ये असंभव है.. आज तक कोई नहीं चढ़ा.. ये असंभव है.. नहीं चढ़ पाओगे" मगर मेंढक आख़िर पेड़ की चोटी पर पहुँच ही जाता है.. जानते हैं क्यूँ? क्योंकि वो मेंढक "बहरा" होता है.. और सारे मेंढकों को चिल्लाते देख सोचता है कि सारे उसका उत्साह बढ़ा रहे हैं इसलिए अगर आपको अपने लक्ष्य पर पहुंचना है तो नकारात्मक लोगों * प्रति "बहरे" हो जाइए।।।।

अथर्व साहू
(कक्षा 3री "ब")

मेरे स्कूल के दिन

मम्मी ने जगाई पापा ने उठाया
कंबल फेक बाहर आया
आसमान में सूरज छाया
घड़ी का समय सात बजे पाया।

कर स्नान नाश्ता किया
पहन मोजा जूता तैयार हुआ
टिफिन के साथ पानी बोतल लिया
लटका बैग साइकल में सवार हुआ।

निकल पड़े हम केवी की ओर
जहां कभी नही होता शोर
चलता है प्रिंसिपल की जोर
पढ़े बच्चे रिकॉर्ड तोड़।

हिंदी इंग्लिश मैथ्स संस्कृत
विज्ञान में सूरज चांद की रीत
मेम ने पढ़ाई, सर ने समझाया
स्कूल जाने में बड़ा मजा आया।

नवांश निषाद
(कक्षा 6वी "ब")

पानी का महत्व

जीवन की धारा में बहता है पानी,
हर पल नई ऊर्जा का संचार करता है।
फिल्टरेशन की प्रक्रिया से गुजरता है,
और साफ-सुथरा होकर हमारे पास आता है।

पानी की बूंदें गिरती हैं धरती पर,
और नदियों में मिलकर बहती हैं।
हर एक जीव को प्यास बुझाता है,
और जीवन की धारा को आगे बढ़ाता है।

फिल्टरेशन का महत्व हमें समझना होगा,
और पानी का संरक्षण करना होगा।
इसलिए पानी का उपयोग सोच-समझकर करें,
और फिल्टरेशन का उपयोग करके साफ पानी पाएं।

पानी की एक-एक बूंद अनमोल है,
इसे बचाना हमारा कर्तव्य है।

राघव डड़सेना
(कक्षा 6वी "ब")

मदद

एक बूढ़ा रास्ते से कठिनता से चला जा रहा था . उस समय हवा बड़े जोरो से चल रही थी | अचानक उस बूढ़े की टोपी हवा से उड़ गई

उसके पास होकर दो लड़के स्कूल जा रहे थे. उनसे बुद्ध ने कहा मेरी टोपी उड़ रही है उसे पकड़ो. नहीं तो मैं बिना टोपी का हो जाऊंगा | वे लड़के उसकी बात पर ध्यान न देकर टोपी के उड़ने का मजा लेते हुए हंसने लगे इतने में लीला नाम की एक लड़की जो स्कूल में पढ़ती थी उसे रास्ते पर आप पहुंची. उसने तुरंत ही दौड़कर वहां टोपी पकड़ ली और अपने कपड़े से धूल चढ़कर तथा पहुंचकर उसे बूढ़े को देती. उसके बाद वे वे सब लड़के स्कूल चले गए | गुरूजी ने टोपी वाली यह घटना स्कूल की खिड़की से देखी थी| इसलिए पढ़ाई के बाद उन्होंने स्टाफ विद्यार्थियों के सामने वह टोपी वाली बात कही और लीला के काम की प्रशंसा की तथा उन दोनों लड़कों के व्यवहार पर उन्हें बहुत धिकाकारा

शिक्षा

यह कहानी में हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें कभी भी किसी का मजाक नहीं उड़ाना चाहिए साथ ही हमें हर जरूरतमंद व्यक्ति को हमेशा मदद करनी चाहिए चाहे वह छोटा हो या बड़ा

उर्वशी ध्रुव
(कक्षा 6वी "ब")

शिक्षक

आप देते हो हमको शिक्षा
फिर लेते हमारी परीक्षा
गलती करे तो हमें समझते
हम रोए तो हमें हंसते
माता ने दिया जीवन दान
आप बनाते हो इस महान
ज्ञान का दीप आप जलाकर
हमारी चमक बढ़ाते हो
विद्या का जल हमें पिलाकर
जीने का ढंग सिखाते हो
इसीलिए मैं कहती हूं
जीवन में कुछ पाना है तो
शिक्षा का सम्मान करो
सर झुका कर आधार से तुम
बच्चे उन्हें प्रणाम करो

उर्वशी ध्रुव
(कक्षा 6वी "ब")

विद्या का महत्त्व

विद्या ही शक्ति है,
ज्ञान ही सूर्य है,
अज्ञानता को दूर कर,
विद्या से ज्ञान प्राप्त कर।

विद्या से ही जीवन संवरता है,
विद्या से ही भविष्य बनता है,
विद्या से ही हमें मिलती है पहचान,
विद्या से ही हमें मिलती है सम्मान।

विद्या की दीपशिखा से,
अज्ञानता का अंधकार दूर होता है,
विद्या की शक्ति से,
जीवन के सारे संघर्ष पार होते हैं।

दर्शन सिह राजपूत
(कक्षा 6वी "ब")

पेड़ पर कविता

पेड़ लगाओ पेड़ लगाओ ,

पेड़ लगाओ पेड़ लगाओ ।

पेड़ों से है जीवन आधार ,

पेड़ों से है जीवन साकार

पेड़ लगाकर रहे खुशहाल ,

तभी होगा सांसों का संचार ।

आओ हम सब मिलकर पेड़ लगाएं ,

धरती मां को हरियाली बनाएं ।

पेड़ों से है हमने अनेक फायदे,

विकास की राह पर है पेड़ हमारे।

पेड़ लगाओ पेड़ लगाओ ,

आओ हम सब मिलकर पेड़ लगाएं ।

स्वच्छ हवा हमें प्रदान करें,

और स्वच्छ जल प्रदान करें ।

ऐसी हमारी धरती पर है जीव जंतु ,

हम सबकी जरूरत पेड़ हमारे ।

पेड़ न काटे हम इसकी प्रतिज्ञा ले ,

आओ हम सब अपने मां के प्रति एक पेड़ लगाएँ ।

आज वर्तमान में बाढ़ भूकम्प से झेल्ती धरती हमारी,

पेड़ लगा कर भगाये मुसीबत सारी

पेड़ लगाओ पेड़ लगाओ आओ हम सब मिलकर पेड़ लगाये।

तान्वी रत्नाकर
(कक्षा 3 री "ब")

टाइगर हिल के नायक

दुश्मन के कब्जे में फंसा था, टाइगर हिल जो अपना था।
इसको वापस फिर से पाना, हर हिंदुस्तानी का सपना था।
जांबाजों की टीम शामिल, योगेंद्र सिंह यादव घातक थे।
कठिन डगर और लंबा रास्ता, ऊंची चोटियां प्राण घातक थे।
वीरों की आहट को पाकर, दुश्मनो की शुरू हुई कार्यवाहियां थी।
तीव्र स्वचालित,ग्रेनेड,रॉकेट, चलती जा रही निरन्तर गोलियां थी।
मित्रो की शहादत देख, वीर योगेंद्र सिह यादव गरजे थे।
गोलियों को सीने में खाते, आगे बढ़ते रहते थे।
चार दुश्मनों को मारकर यादव, खुद घायल होकर डटे रहे।
इनसे प्रेरित होकर टीम सदस्य भी, मौके पर तनकर खड़े रहे।
कारगिल के टाइगर हिल में, इन वीरों ने परचम लहराया था।
ऑपरेशन विजय के नायक योगेंद्र सिंह यादव को सब ने खूब सराहा था।
योगेंद सिंह यादव के अदम्य साहस और वीरता से, परमवीर चक्र का सम्मान मिला।
कारगिल के इस युद्ध से भारत और वीरों का कद, मान बढ़ा।

आर्वी यादव
(कक्षा 3 री "ब")

जीवन का लक्ष्य

वो आकाश क्या जिसमें तारे न हो,
वो सागर क्या जिसमें गहराई ना हो,
वो पथ क्या जो पथरीले ना हो,
वो जीवन क्या जिसमें संघर्ष ना हो,
वो सूर्य क्या जिसमें तपन ना हो,
वह चांद क्या जिसमें शीतलता ना हो,
वो बरसात क्या जिसमें बिजली ना हो,
वो जीवन क्या जिसमें प्रकाश ना हो,
वो बाग क्या जिसमें हरियाली ना हो,
वो डाली क्या जिसमें कांटे ना हो,
वो कहानी क्या जिसमें अंत न हो,
वो पतन क्या जो आजाद ना हो,
वह कर्म क्या जिसमें लगन ना हो,
वो जीवन क्या जिसका कोई लक्ष्य ना हो

सार्थक साहू
(कक्षा 3 री "ब")

विद्यालय

विद्यालय मेरा प्यारा है ,
सारे जहां से न्यारा है ।
शिक्षक हमें सिखाते हैं,
ज्ञान का पाठ पढ़ाते हैं ।
रोज स्कूल हम जाते हैं,
दोस्त खूब हंसाते हैं ।
विद्यालय में हम पढ़ते हैं,
अपना जीवन गढ़ते हैं।
विद्यालय में सीखते हैं,
नित आगे - आगे बढ़ते हैं ।

लुभ्या निषाद
(कक्षा 3 री "अ")

मेरा शिक्षक कहते है हमे रोज खूब मेहनत करना चाहिए। अक्सर जब हमारे पास कोई काम होता है तो हम सोचते हैं कि उसे कल या बाद में पूरा कर देंगे। ऐसा करने से हमारे पास काम का बोझ अधिक होने लगता है और फिर उस काम को करने का मन नहीं होता तथा तनाव बढ़ने लगता है। जो भी पढ़ाया या सिखाया जाता है उसे लगन से पूरा करना चाहिए। रोज जल्दी उठकर व्यायाम करना भी पसंद करना चाहिए। खेलकूद में भाग लेना भी जरूरी होता हैं। अपनो के बड़ों की आज्ञा का पालन करें। अपना काम स्वयं करना चाहिए। किसी भी काम को छोटा- बड़ा नहीं समझना चाहिए। इसीलिए तो कहते हैं जो भी काम मिले उसे पसंद करना चाहिए।

पार्थ चंद्राकर
(कक्षा 3 री "अ")

बेचारा कौआ

एक बार की बात हैं। एक कौआ आसमान में उड़ रहा था। उड़ते समय जमीन पर उसे एक रोटी दिखाई दिया। रोटी को लेकर वह पेड़ पर बैठ गया और सोचने लगा कि यदि इसके साथ मिठाई मिल जाता तो कितना अच्छा होता। उस कौवे को एक लोमड़ी ने देखा और कहा - यह रोटी मेरी है। कौवे ने कहा - यह रोटी मेरी है। यह सुनकर लोमड़ी ने एक तरकीब लगाई उसने कौवे से कहा यदि तुम मेरे तरह नाचोगे तो मैं तुम्हें एक मिठाई दूंगा। कौवा खुश होकर नाचने लगा और उसके पैर से वह रोटी नीचे गिर गई। लोमड़ी यह देखकर फौरन रोटी पर झपटा। रोटी खाकर लोमड़ी दुम हिलाते हुए वहां से चला गया। बेचारा कौवा! दुखी होकर रोने लगा।

पार्थ चंद्राकर
(कक्षा 3 री "अ")

मेरा दिनचर्या

सूरज जल्दी आता है
उजियारा फैलाता है
मुर्गा बांग लगाता है
हम सबको उठाता है
उठकर नहाने चलते हैं
मंजन वंजन करते हैं
नहा धोकर तैयार होकर
सुबह का नाश्ता करते हैं
होमवर्क सारा पूरा करके
स्कूल बैग हम भरते हैं
लंच का डिब्बा रखते हैं
पानी का बोतल लेते हैं
घर पे सबको टाटा करके
समय पर स्कूल जाते हैं।

शुभांश यादव
(कक्षा 3 री "अ")

पृथ्वी हमारी जिम्मेदारी

पृथ्वी सिर्फ रहने की जगह नहीं है,

इसने हमें बहुत कुछ दिया है और अभी भी बहुत कुछ देना बाकी है,

बेहतर दुनिया के लिए बेहतर इंसान, बेहतर आत्मा बनने के बारे में जानें जंगल, महासागर हमारी सुंदरता और ताकत हैं, धरती के प्रति हमारी जिम्मेदारी गहन होनी चाहिए।

हमें भी पृथ्वी को कुछ देना चाहिए।

विभूति चंद्राकर
(कक्षा 3 री “ __”)

तीन किसान भाई

एक गांव में तीन किसान भाई रहते थे । वे धान खेती करते थे। उनमें से एक ने शहर में दुकान खोली हुई थी। जहां वे अपने खेत से उपजा चावल बेचा करते थे। उनके चावल काफी लोकप्रिय थे और उनके ग्राहक भी उनके अलावा और कहीं से चावल नहीं लेते थे। एक साल इलाके में बाढ़ आ गयी और अधिकतर किसानो की फसल बहा गई सौभाग्य से उनकी फसल बच गई । उन्हें लालच आ गया उन्होंने थोड़े से चावल रोककर बाकी सब गोदाम में भरवा दिया। शहर आकर कम चावल का बहाना बनाकर ऊंचे दामों में चावल बेचना शुरू कर दिया । उनके जो गरीब ग्राहक थे , वे दुसरी दुकानों पर जाना शुरू कर दिया । एक भाई ने दुसरे भाई को कहा ऐसे तो हमे बहुत नुकसान हो जाएगा । दुसरे भाई ने कहा कि हम गोदाम से चावल यहां ले आते हैं । जब उन्होंने गोदाम खोला तो पाया कि वहा चूहों ने अनेक बोरो को काट दिया था। उन्होंने ईश्वर का धन्यवाद दिया , जिनसे उन्हें समय रहते
सद्बुद्धि।

शिक्षा –ज्यादा का लालच नुकसानदेह साबित होता है।

खुशी दुबे
(कक्षा 3 री "अ")

जल बचाओ, ग्रह बचाओ

जल संरक्षण आपसे शुरू होता है

जल बचाओ, जीवन बचाओ

जल ही जीवन है

पानी बचाने का करो जतन, क्योंकि पानी है बहुमूल्य रतन

जल बहने से पहले दो बार सोचें

जल संरक्षण एक वैश्विक जिम्मेदारी है

जल बचाने का करो जतन, ये है जीवन का अमूल्य रतन

जल की होगी बर्बादी, तो नहीं होगी कोई आबादी

जल बचाओ, बेहतर कल के लिए।

शिवांग पाण्डेय
(कक्षा 3 री "अ")

चुटकुला

सुनो भाई गप्प सुनो भाई सप्प नाव में नदिया डूबी जाए

चीटी चली बाजार को नौ मन मल के तेल ईंटे दो बगल में

ले ली सिर पर धर ली रेल

सुनी भाई गप्प सुनो भाई सप्प गधा चढ़ा खजूर पर खाने

को अंगूर

पीट पे उसके नाच रहे थे पांच पंच लंगूर

सुनो भाई गप्प सुनो भाई सप्प नाव में नदिया डूबी जाय

हाथी ढम ढम ढोल बजाए ऊंट खाट पर सोए

बिल्ली सबकी रोटी सेके घोड़ा कपड़े धोए सुनो भाई गप्प

सुनो भाई सप्प

नाव में नदिया डूबी जाय

कोमल सिंहा
(कक्षा 3 री "अ")

प्रकृति से सीखो

पर्वत कहता

पर्वत कहता

शीश उठाकर

तुम भी ऊंचे बन जाओ।

सागर कहता है

लहराकर

मन में गहराई लाओ ।

समझ रहे हो

क्या कहती है

उठ – उठ गिर – गिर तरल तरंग ।

भर लो, भर लो

अपने मन में

मीठी मीठी मृदुल उमंग ।

धरती कहती

धैर्य न छोड़ो

कितना ही हो सिर पर भार ।

नभ कहता है

फैलो इतना

ढक लो तुम सारा संसार ।

यशस्वी नेताम

(कक्षा 3 री "अ")

चंदा मामा

चंदा मामा ss , चंदा मामा ss
आना मेरे पास
जब मैं सो जाऊं
सपनों में
ले जाना
अपनी दुनिया में
जहां रहते
सभी मिलजुल कर
न होती लड़ाई- झगडे
ऊंच-नीच का भेद न होते
मजहब की दीवारे न होती
ऐसी जगह ले जाना
चंदा मामाss, चंदा मामा ss
आना मेरे पास
जब मैं सो जाऊं
सपनों में
ले जाना आसमां के पास

वहां न गांव, न शहर है
न है मजहब की दीवार
बड़ा सुकून है गगन में
ले चलना क्षितिज के पार
चंदा मामा ss,
मेरे प्यारे चंदा मामा ss।

मन्नत
(कक्षा 3 री "अ")

भारत

भारत तु है हमको प्यारा,
तु है सब देशों से न्यारा।
मुकूट हिमायल तेरा सुंदर,
धोता तेरे चरण समुंदर।
गंगा यमुना कि है धारा ,
जिससे पवित्र जग सारा।
अन्न फुल ,फल,जल है प्यारे,
तुझमें रत्न जवाहर न्यारे।
राम कृष्ण से अंतर्यामी,
तेरे सभी पुत्र हैं नामी।
हम सदैव तेरा गुण गाएं,
सब विधि तेरा सुयश बढ़ाये।

उदिति चंद्राकर
(कक्षा 3 री "अ")

लालच बुरी बला है

एक पदमपुर नाम के गांव में राहुल नाम का एक व्यक्ति रहता था जो एक कैंटीन चलता था वह बच्चों से ज्यादा पैसे लेता था और उसे सामान खराब देता एक दिन वह दुकान में सामान भेज रहा था तभी एक बच्चा एक कॉपी लेने के लिए दुकान आया तो राहुल ने उसे₹50 की कॉपी₹100 में बेचा तो बच्चे ने कहा कि यह कॉपी तो₹50 की है तो आप इसे क्यों ₹100 में बेंच रहे हैं तो राहुल ने कहा मेरी दुकान तो मेरी मर्जी तुम कौन होते हो मुझे रोकने वाले अराउंड में यह भी कहा कि तुमने यह बात किसी को पता ही तो वह उसे बहुत मारूंगा फिर उसे बच्चों ने अपने माता-पिता को बताएं उसके पापा ने पुलिस को यह सारी बात बताई फिर पुलिस ने राहुल को जेल भेज दिया और को उसकी दुकान सील कर दिया हमें इस कहानी से यह शिक्षा मिलती है की लालच बुरी बला है

प्रयांश मिश्रा
(कक्षा 6वी "ब")

हम तो स्कुल में पढ़ने जाएंगे

हम तो स्कुल में पढ़ने जाएंगे
ज्ञान विद्या वहां हम पाएंगे
खेल-खेल में हम सब सीखते हैं
अपने भविष्य की कहानी लिखते हैं
ज्ञान की ज्योति हम सब जलाएंगे...
स्कुल तो ज्ञान का मंदिर है
जहां से मिलती हमारी मंजिल है
हमको नई नई राह दिखाते हैं
सारे शिक्षक हमको बहुत भाते हैं
हम उनका सदा गुण गाएंगे..
जो भविष्य हमारा गढ़ते हैं
हैं खुशनसीब कि हम पढ़ते हैं
पढ़-लिखकर नाम हम कमाएंगे
मां भारत की शान बढ़ाएंगे
पढ़ेंगे और सबको पढ़ाएंगे
हम तो स्कुल में पढ़ने जाएंगे

वेदान्त चंद्राकार
(कक्षा 6वी "ब")

प्रकृति

सुंदर रूप इस धरा का
आंचल जिसका नीला आकाश
पर्वत जिसका ऊंचा मस्तक
उस पर चांद,सुरज की बिदीयो का ताज
नदियो-झरनो से छलकता यौवन
सतरंगी पुष्प-लतओ ने किया श्रृंगार
खेत-खलिहानों में लहराती फसले
बिखराती मंद-मंद मुस्कान
हां, यही तो है,
इस प्रकृति का स्वच्छंद, स्वरूप
प्रफुललित जीवन का

हिमाक्षी पाण्डेय
(कक्षा 6वी "ब")

पुस्तक: एक रहस्य

मैं कागज की देह में बसी कहानी हूँ ,
चुपचाप पड़ी पर जुबां मे पुरानी हूँ|
हर पन्ना मेरा एक दरवाजा है ,
जो खोले तो अंदर एक ताज |

मुझे पढ़ा तो अनंत को जानोगे,
मुझे छोड़ा तो खाली ही मानोगे |
मै सहेजती हू वो जो खो चुका है,
और बताती हू वो जो हो चुका है|

मेरे भीतर गुंजते है सवाल ,
जिन्हे समझना ही है असली कमाल|
मै इतिहास हूँ मै भविष्य का मर्म हूँ ,
मै खामोश हूँ फिर भी अनमोल धर्म हूँ|

क्या तुमने कभी मुझे छुआ है?
क्या मेरी खामोशी को सुना है?
जो सुन ले वो बदल जाता है,
मेरा पाठ हर अंधकार मिटाता है|

मै कोई खेल नही ,न ही सजावट हूँ
मै वो दीपक हूँ जो हर युग मे जलाई जाती हूँ|
पुस्तक हूँ मै. मेरे संग चलोगे?
अपने खोऐ हुए सवालो को फिर पाओगे|

धनश्री कन्नौजे
(कक्षा 9वी "ब")

परिश्रम का ईनाम

हरिपुर नामक एक छोटा सा गांव था। गांव के बाहर एक रास्ता था। रास्ते के बीच में एक बड़ा सा पत्थर पड़ा हुआ था। उस रास्ते से कई लोग गुजरते थे। उनमे से कई लोगो को उस पत्थर की ठोंकर लगी। ठोंकर लगने से कई लोग नीचे गिरे और कइयो को काफी चोट पहुंची। पर उनमे से किसी ने भी पत्थर को रास्ते से उठाकर एक तरफ नहीं रखा। गांव के लोग पत्थर रखने वाले को बुरा भला कहते हुए आगे बढ़ जाते थे। एक दिन उस रास्ते से एक गरीब किसान गुजर रहा था। उसको भी पत्थर की ठोंकर लगने वाली थी, पर वह बच गया। उसने सोचा की रोज न जाने कितने लोगो को इस पत्थर की ठोंकर लगती होंगी? इसे रास्ते से हटा देना चाहिए। फिर उसने जोर लगा कर पत्थर को हटाया और रास्ते के किनारे रख दिया। पत्थर के नीचे एक छोटा सा गड्डा था। उसमे एक थैली रखी हुई थी। किसान ने वह थैली उठा ली। उसमे एक चिट्ठी और कुछ रूपए थे। चिट्ठी में लिखा था पत्थर हटाने का ईनाम। जब गांव के लोगो को इस बात का पता चला तो उन्हें अपने आलस्य पर खूब पछतावा हुवा और शर्म भी आई।

सीख –परिश्रम और परोपकार का फल अच्छा ही होता है।

मुस्कान कन्नौजे
(कक्षा 7वी "अ")

हमारा केंद्रीय विद्यालय।।

केंद्रीय विद्यालय केंद्रीय विद्यालय
विद्यालयओ में जैसे हिमालय
यहां है शिक्षा की निरंतरता
सीखने की तत्परता
कुछ कर गुजरने की सतर्कता
केंद्रीय विद्यालय केंद्रीय विद्यालय
विद्यालयओ में हिमालय
शिक्षक है गुणवान
विद्यार्थियों के लिए महान
पढ़ो पढ़ो और बनो निपूर्णवान
यहां है सुशासन
सरस्वती जी का आसान
केंद्रीय विद्यालय केंद्रीय विद्यालय
विद्यालयों में हिमालय

ओजल ठाकुर
(कक्षा 8वी "अ")

पेड़ हमारे साथी है

पेड़ हमारे साथी है,
छाया हमको देते है।
बाढ़ से हमे बचाते है,
मीठे फल भी देते है।
पेड़ कितने जरूरी है,
फिर भी पेड़ बेचारे कटते हैं।
हम भी पेड़ लगाएंगे,
संसार को हरा भरा बनाएंगे ।

केतन सिन्हा
(कक्षा 6वी "ब")

स्वास्थ्य का वरदान

तन स्वस्थ हो, मन भी खुशहाल,
रहे सदा मुस्कान कमाल।
खेलें, कूदें, खाएँ फल,
रहे तंदुरुस्त हर पल।

सुबह उठें हम जल्दी-जल्दी,
न करें आलस, न हों मंदी।
दूध, दही और साग-सब्जी,
रखें हमें ताकतवर, तंदुरुस्ती।

रोज़ करें हम योग और व्यायाम,
रहे शरीर मज़बूत और काम।
बीमारियों से दूर रहें,
स्वस्थ जीवन का आनंद लें।

तो आओ सब मिलकर गाएँ,
स्वास्थ्य का पाठ सबको सिखाएँ।
तंदरुस्ती का जो रखे ध्यान,
खुशहाल रहे उसका जहान।

काम्या चंद्राकर
(कक्षा 5वी "अ")

हम तो स्कुल में पढ़ने जाएंगे

ज्ञान विद्या वहां हम पाएंगे

खेल-खेल में हम सब सीखते हैं

अपने भविष्य की कहानी लिखते हैं

ज्ञान की ज्योति हम सब जलाएंगे...

स्कुल तो ज्ञान का मंदिर है

जहां से मिलती हमारी मंजिल है

हमको नई नई राह दिखाते हैं

सारे शिक्षक हमको बहुत भाते हैं

हम उनका सदा गुण गाएंगे..

जो भविष्य हमारा गढ़ते हैं

हैं खुशनसीब कि हम पढ़ते हैं

पढ़-लिखकर नाम हम कमाएंगे

मां भारत की शान बढ़ाएंगे

पढ़ेंगे और सबको पढ़ाएंगे

हम तो स्कुल में पढ़ने जाएंगे

वेदान्त चंद्राकार
(कक्षा 6वी "ब")

परिवार

परिवार एक सीढ़ी नहीं है ,

जिस पर चढ़कर आगे बढ़ जाए।

परिवार तो एक मंदिर है, जो मन में बसता है।

परिवार एक दूसरे की दिलों की इसकी एहसास है।

परिवार को फूलों की बगिया है , और हमारे बड़े बुजुर्ग इस बगिया की माली है।

परिवार समुद्र से भी अधिक गहराई का एहसास है।

जो दिलों की गहराइयों से मिलन होता है।

परिवार में सब कुछ होता है प्यार ,अपनापन, त्याग, समर्पण, एक दूसरे की परवाह।

बस इसमें एक चीज नहीं होती

झूठ की बुनियाद।

परिवार है तो हम हैं और हमसे हमारी दुनिया है ।

आओ सब मिलकर खुशियां मनाएं होली ,ईद ,क्रिसमस की मिठाई हम भी खाएं और पड़ोसी को भी खिलाएं।

प्यार से रहे और परिवार चलाएं

अपनी से बड़े, बुजुर्गों, गुरुओं का आशीष ले कर जीवन बेहतर बनाएं।

आओ मिलकर स्वर्ग से सुंदर परिवार बनाए।

आरव आर्यन
(कक्षा 5वी "अ")

दादाजी_की_ छतरी

दादाजी की छतरी एक
मन भा जाता उसको देख
हर मौसम में लेकर चलते
धोती के संग खूब थे खिलते
अक्सर हम स्कूल से आते
खाट के कोने में उसको पाते
जब बरसात का मौसम आता
तब कुछ पल मुझको मिल पाता
छतरी लेकर करू खेल तमाशा
कभी मिल जाता इक जोर तमाचा
दादाजी की तश्वीर मुझे याद दिलाता
डंडा, टोपी, चश्मा, घड़ी और छाता

आर्वी यादव
(कक्षा 3री "ब")

सावन के गीत

रिमझिम -रिमझिम सावन आए ,

काले -काले बादल लाए ,

वृक्षों और वनस्पतियों को फिर से जीवन की नई उम्मीद दिलाए ।

नदियां - नाले भर -भर जाएं,

घर के भीतर बौछारें आए ,

टिप- टिप की आवाज में हम नाचे और झूम के गाए ।

तपती गर्मी को धूल चटाए ,

सूखी धरती की प्यास बुझाए, बारिश के सुहाने मौसम में हम छतरी का आनन्द उठाएं ।

चावल की खेती लहराए,

कृषकों के चेहरे खिल जाएं ,

धरती मां जब पानी को खींचे,

चारों ओर मिट्टी की खुशबू आए ।

बच्चे कागज की नाव बनाएं,

मम्मी चाय पकौड़ों की थाल सजाएं,

बागों में डल गए झूले देखो, चलो ! सब सावन के गीत गुनगुनाए ॥

सुयशी जौहरी
(कक्षा 10वी "अ")

एक पेड़ माँ के नाम

एक पेड़ माँ के नाम लगाए,
धरती माँ को खुशहाल बनाए।
एक – एक कर पेड़ हजार होंगे,
गाँव – शहर गुलजार होंगे।
हरा – भरा होगा जग सारा,
सुधरेगा पर्यावरण हमारा।
सुबह – शाम ये शुद्ध हवा देंगे,
हम सबको ये स्वस्थ रखेंगे।
बारिश होगी, ठंडक बढ़ेगी,
गर्मी से निजात मिलेगी।
नए कोपल, नए फूल खिलेंगे,
हवा बहेगी, सब महकेंगे।
तरो – ताज़ा होगा जीवन अपना,
स्वस्थ रहने का पूरा होगा सपना।
जीवन को ना व्यर्थ गवाएँ,
एक पेड़ माँ के नाम लगाएँ।
धरती माँ को खुशहाल बनाएँ,
धरती माँ को खुशहाल बनाएँ।

नीलमाधव सिंह
(प्राथमिक शिक्षक)

ओ सावन...

झूम झूम बरसो

प्रिय मनभावन..

तुम्हारी प्रतीक्षा में

प्यासी निश्चल अंखियां

निर्मल मन आतुर

प्रेमरस वियोग जन बतियां

हो अनन्य विरह व्याकुल

चाहत में तुम्हारी दिन- रात

करते हम एकांत एकालाप

सावन! ओ सावन...

तुम्हीं तो हो सबके प्रिय पावन!

तुम्हीं से जिंदगी का उल्लास

तुम्हीं से सकल जग की आस

आओगे न बनकर

तुम मेवल मधुमास,

पूरी करने अंतर की प्यास??

रीते मन की यही उम्मीद

बरसो खूब मन के मीत।

सावन !ओ सावन

रिमझिम बूंदों से

शोभित सुंदर

तन्वी श्यामा का श्रृंगार ,

जो प्रकट प्रेम का है इजहार

सनेह तुम्ही से प्रिया प्रतीति...

न हो कभी तुमसे बस इति

सावन! ओ सावन...

ओ प्रिय मनभावन!

अंबर में बदली है छाई

करे मयूर नृत्य बन कन्हाई!

झूलों की पेग

मेघ घनन घन

कजरी का मधुर

मधुरस गान,

यही तो है प्रिय

तुम्हारी पहचान।

भीगो दो रीता मनांचल

नन्ही मेहा रिमझिम से,

ये है मेरा नेह निवेदन
मानोगे न इस चौमास??
आए न तुम जो इस जीवन
जग होगा तब मृत्यु उपवन!
सावन! ओ सावन...
तुम हो अंतस के असीम प्यार
इस सृष्टि के अखंड अनिवार्य।
स्त्री- पुरुष के निज मनदेह
आत्मा- परमात्मा के एकात्म स्नेह
सावन! ओ सावन .....
मेरे प्रिय अतुलित मनभावन!

वंदना आचार्य
स्नातकोत्तर शिक्षक(हिंदी)

मन

मन, कैसा है यह मन इतना चंचल इतना तेज कभी हसाए कभी रुलाय प्यास इसकी बढ़ती ही जाए चाल इसकी जान ना पाए केवल अपनी बात मनाए मन की पीड़ा मन ही जाने मन की भाषा मन पहचाने मन है मनमौजी मतवाला अपनी बात मानने वाला मन के चक्कर में जो आए सूद बुद्ध अपनी भूल ही जाए जब हो द्वंद मैती और मन में हमेशा मन ही बात मनाये

मन को बांधो ध्यान लगाओ इसकी बातों में ना आओ मन की उलझन मे ना उलझना मन की सुनना मन की करना मन मन भर है बढ़ता जाता मन जब अपनी जिद पर आता ध्यान करो विश्राम करो अब मन भर अपना मान करो अब

रोहिता बसोड़
(पीजीटी केमेस्ट्री)

शिक्षक की महिमा

शिक्षक से मिलता ज्ञान ,धैर्य व प्यार
अनुकरणीय है शिक्षक के विचार
भविष्य को देते है आकार
सभी के जीवन को करते है साकार
दूर करते सब दोष विकार
हे शिक्षक तुमको नमस्कार

शिक्षा,करुणा और क्षमा की मूर्ति
बुद्धि,सद्गुणों की तुमसे है शक्ति
राम- कृष्ण ने की तेरी भक्ति
तुम बिन नही किसी की कीर्ति
ब्रह्मा,विष्णु,महेश के हो अवतार
हे गुरुवर तुमको नमस्कार

अर्जुन ,चन्द्रगुप्त की तुमसे है पहचान
बिन कृपा तुम्हारे सब है अनजान
तुमसे है डॉक्टर इंजीनियर
तुम बनाते हो वकील और अफसर
इस धरती में तुम हो शिल्पकार
हे राष्ट्र निर्माता तुमको नमस्कार

तेरी भक्ति को कबीर ने माना
विवेकानंद ने तुमको सब कुछ जाना
तेरी दया से बनते हम विद्वान
इस जग के हो तुम भगवान
तुम कराते हो भवसागर पार
हे गुरुदेव तुमको नमस्कार

ओमप्रकाश चन्द्राकर
(प्राथमिक शिक्षक)

जीवन में कला का महत्त्व

साहित्य संगीत कला विहीनः साक्षात् पशु पुच्छ विषाणहीनः।।

जीवन उर्जा का महासागर है। जब अंतःचेतना जागृत होती है तो उर्जा जीवन को कला के रूप में उभरती है। कला जीवन को सत्यं शिवम् सुन्दरम् से समन्वित करती है। इसके द्वारा ही बुद्धि आत्मा का सत्य स्वरूप झलकता है।कला रूपी सागर बहुत विस्तृत है जिसका कोई ओर-छोर नहीं, जितना जानते जायेंगे उतना ही कम लगता है।

टालस्टाय के शब्दों में कला – अपने भावों की क्रिया रेखा ,रंग,ध्वनि या शब्द द्वारा इस प्रकार अभिव्यक्ति करना कि उसे देखने या सुनने वाले में भी वही भाव उत्पन्न हो जाए। हृदय की गहराइयों से निकली अनुभूति जब कला का आकर लेती है ,कलाकार का अंतर्मन भी मानो मूर्त रूप ले लेता है। कला का माध्यम चाहे जो भी हो ,रंगों की भर हो या सुरों की पुकार या वाद्यों की झंकार। कला हमारे आत्मिक शांति का साधन है। कला कर्म कठिन तपस्या या साधना है ,इसके द्वारा ही कलाकार सुनहरी और इन्द्रधनुषी कल्पना को साकार रूप दे पाता है।

कला दो प्रकार की होती है पहला –स्वान्तः सुखाय यानि खुद की संतुष्टि के लिए और दूसरा –समाज उपयोगी। कला में इतनी सामर्थ्य होना चाहिए कि वह जन –मानस के संकीर्ण विचारों की सीमाओ से ऊपर उठाकर उसे ऐसे उच्च स्थान पर पहुंचा दे जहाँ मनुष्य केवल मनुष्य रह जाता है। निजी स्वार्थ ,परिवार,क्षेत्र,धर्म ,भाषा और जाति इत्यादि मानवीय भावनाओ की सीमाओं को मिटाकर व्यापकता प्रदान करती है। मनुष्य के विचार को उच्च स्तर पर ले जाकर वसुधैव कुटुम्बकम से जोडती है।

चित्रकला सभी कलाओं में श्रेष्ठ मानी जाती है ,क्योंकि एक छोटे से जगह पर हम हजारों किलोमीटर की दूरी दिखा सकते हैं साथ ही विभिन्न भावों को स्थायी रूप से प्रदर्शित भी कर सकते हैं।

कला मात्र विद्या ही नहीं अपितु यह मानव की आवश्यकता है। कला दो प्रकार की होती है पहला –स्वान्तः सुखाय यानि खुद की संतुष्टि के लिए और दूसरा –समाज उपयोगी । हमारे प्राचीन ग्रंथों में भी विभिन्न कलाओं का वर्णन मिलता है।

संगीत केवल मानव मात्र में ही नहीं अपितु पशु–पक्षियों में भी अमृत रस भर देता है कहा भी गया है–

संगीत है शक्ति ईश्वर की,सुर में बसे हैं राम।
रागी तो गाये रागिनी ,रोगी को मिले आराम॥

जी.के.निर्मलकर
(टीजीटी आर्ट)

जिंदगी में खुश रहने और विद्यार्थी जीवन में अपनाने के लिए महत्वपूर्ण बातें

1. दूसरों का भला करने सेअपना भला कुदरती रूप सेअपनेआप हो जाता है।
2.अपने शब्दों को सावधानी से चुने क्योंकि मुंह से निकला हुआ शब्द और कमान से निकला हुआ तीर कभी वापस नहीं आता।
3.कभी किसी से द्वेष ना रखें, क्षमा करें, भूल जाए और आगे बढ़े।
4 .अपने चरित्र को इतना मजबूत बनाएं कि कोई उसे हिला भी ना सके।
5 .ईमानदारी का गुण जीवन में सिर ऊंचा करके जीने का रास्ता दिखाता है।
6.स्नेह पाने के लिए पहले स्नेह बांटना पड़ता है, दूसरों के हमदर्द बने उनके दर्द का मजाक ना उड़ाए।
7.हमें खुले दिमाग का होना चाहिए न कि खाली दिमाग का।
8 .अपनी ज़िम्मेदारियों से भागना छोटेपन की निशानी है।
9.हम स्वयं के लिए महत्वपूर्ण हो सकते हैं परंतु खुद से पहले दूसरों के बारे में सोचने से हमारे भीतर का सौन्दर्य निखरता है।
10 . यदि आप किसी की मदद करने के योग्य है तो जरूर करे इससे जो सुख की अनुभूति होती है उसकी न तो तुलना की जा सकती हैं और न ही इस सुख को शब्दों में बयां किया जा सकता सकता है। हो सके तो मदद को गुप्त रखें।
11 .जिदंगी में जब भी मौका मिले हंसते-मुस्कुराते रहिए क्योंकि जिदंगी मुस्कुराने के बहुत कम मौके देती है।
12 .अपने जीवन में सकारात्मक सोच वाले दोस्तों एवं अच्छी पुस्तकों को महत्व दें।
13.अपने आत्म गुणों पर विश्वास करें।
14.अपने से छोटे और अपने से बड़े दोनों से ही बहुत प्यार और सम्मान से बात करें।
15 .हर छोटी-छोटी चीजों में ख़ुशी तलाशे।

श्रीमती वन्दिनी जौहरी
(पुस्तकालयाध्यक्ष)

English Department

अंग्रेजी विभाग

Over confidence can rain you

The story revolves around a boastful here and a slow tortoise who engaged in race. One day , the tortoise accepts the hare amusement. The race begins, and the hare quickly takes a significant lead. Overconfident hare decides to take a nap, believing he has plenty of time to win. Meanwhile, the tortoise continues at his steady pace, slowly but surely making his way toward the finish line .
When the hare wakes up, he realises the tortoise is close to winning. Despite his fast sprint, the hare arrives too late, and the tortoise crosses the finish line first.
Moral of the story= overconfidence can ruin you.

Mayank sinha
Class 7th "A"

The Ugly Tre

In a dense forest, all tall tress would make fun of a bent tree, calling it ugly. The bent tree wonderd why God had not made it like the other trees, as bird never made their nests on it,nor could it give shade to travellers . One day ,a woodcutter came to cut down some tree.seeingthe twisted tree , he thought he would not be able to cut ling , straight logs from it. As he went near the beautiful trees with his axe, the tree got scared. One by one he cut down all the straight tree, who thought of themselves better than the bent tree.The twisted tree thanked God for not making it the way it was.

Moral-We must learn to be content with what god has given us.

Sudhanshi Patel
Class 8th "B"

Value of Education

once upon a time in a small village nestle in the heart of the countryside there lived a young boy named Ravi was the son of poor farmer and his family had the opportunity to receive an education growing up Ravi watched with enjoy as the children of the wealthy landowner in the village went off to school each clay while he and his siblings toiled in the field despite the obstacles in the way Ravi was determined to receive on education he knows that it was the key to unlocking a
brighter futher for himself and his family and he was willing to do whatever it took to
achieve his dream one day Ravi approached
the village school teacher and begged for the
Chance at attend school the teacher was hesitant at first but he saw the determination
in Ravi,s eyes and decided to give him chance
and so Ravi began his education he worked tirelessly studing long into the night and
waking up before down to help his family with
the farm worked before heading off to school it was not an easy life .

Lawanya sahu
Class 6th "B"

Dada ji and international Coffee day

RIYA AND RAHUL WERE FILLING CROSSWORD PUZZLE.
RIYA;THE NEXT QUESTION IS ,WHICH AND S
RAHUL;THAT'S EASY MILK CAN BE CONSUMED
,AND MILK IS A FOUR -LETTER WORD.
RAHUL;OH ,I DIDN'T THINK OFTHAT .LETS ASK DADAJI.
DADAJI ENTERS THE ROOM .
DADAJI; WHAT DO YOU WANT TO ASK ,KIDS.
RIYA;DADAJI,THERES A CROSSWORD
PUZZLE IN TODAY'S NEWSPAPER .THOSE WHO SOLVE IT CORRECTLY WILL WIN GIFT VOUCHERS .WE NEED YOUR HELP TO FILL IT OUT.
RAHUL;THE QUESTION IS,WHICH BEVERAGE CAN BE CONSUNED BOTH HOT AND COLD .
DADAJI;KIDS,THE ANSWER TO THIS QUESTION IS RIGHT THERE.
RIYA;WHERE,DADAJI WE DID'T UNDERSTAND.
DADAJI;KID'S TODAY IS OCTOBER 1ST ,INTERNATIONAL COFFEE DAY ,AND THE CROSSWORD YOU'RE FILLING OUT IS ALSO RELETED TO COFFEE.

RIYA;AND ALSO TELL US ABOUT COFFEE .
DADAJI;COFFEE WAS DISCOVERED IN ETHIOPIA .FROM THERE,IT SPREAD WORLDWIDE THROUGH YEMEN GENERALLY,COFFEE IS CONSIDERED HARM FUL BECAUSE IT CONTAINS CAFEINE. BUT CONSUMING SOME AMOUNT OF COFFEE IS BENEFICAL

RAHUL;HOW IS IT BENEFICIL,DADAJI
DADAJI; COFFEE REDUES THE RISK OF TYPE 2 DIABETES ,PARKINSON'S AND ALZHEIMER'S DISEASES.IT ALSO HELPS CONTROL WEIGHT, AND IT HELPS KEEP THE LIVER AND THE BRAIN HEALTHY.
RIYA;OH,SO INTERNATIONALCOFFEE DAY IS CELEBRATED TO INFORM PEOPLE ABOUT THE BENEFITS OF COFFEE.
DADAJI;YES,BUT IT IS MAINIY CELEBRATED TO SUPPORT MILLONS OF FARMERS WHO EARNS LIVELIHOOD .

THROUGH COFFEE AND TO GIVE COFFEE LOVERS AROUND THE WORLD A DAY TO CELEBRATED.
RAHUL;WOW DADAJI,THE NEXT QUESTION IS,WHICH PART OF COFFEE PLANT DOES COFFEE COME FROM.
DADAJI;FROM SEEDS,ALSO CALLED 'BEANS' YOU KNOW,THEREARE MANY TYPES OF COFFEE-ESORESSO,LATTE,AMERICANO,CAPPUINO,AND MOCHA.ALRIGHTKIDS,HERE'SYOUR COMPLETED CROSSWORD.
RIYA AND RAHUL;WOW,NOW WE CAN SEND IT TO THE GIVEN ADDRESS AND ANDWIN A PRIZE.
RIYA AAND RAHUL SAID THIS HAPPILY,AND DADAJI SMILED.

B. Raga Rishitha
Class 4th "A"

Trees Our Best Friend

Of all the living beings inhabiting this earth, trees are our best friends. Mother Nature, in her infinite wisdom, has gifted them to man to live in harmony with him and to be of great service to him. Besides fruits, trees provide important raw materials for our industries. Industries provide employment to people. The wood for furniture, housing, railway carriages and ships come from trees. Wood is also used for fuel and for making charcoal which is used as fuel. From trees we get wood pulp to make paper and artificial yarns (like nylon). Trees also give us products such as spices, rubber, turpentine, eucalyptus oil and gum. We also get honey and many valuable things for medicine from forests. We get so many things from forests that forests are rightly known as green gold Trees provide shade to tired travelers and animals and shelter to innumerable birds and insects. Trees keep the environment clean. They absorb harmful carbon dioxide from the air and fill the atmosphere with precious life sustaining oxygen. In this way they reduce air pollution. Therefore, trees are called the lungs of nature. Forests retain humidity and attract rains. There will be no rain if there are no trees. It is for this reason that trees are known as rain catchers. In fact, all our basic necessities like, air, water, food, clothing and shelter come directly or indirectly from trees. We thus, owe our very existence to trees. If there were no trees, there would be no rain and land would turn into an arid desert. Mankind would perish for want of food, drinking water, fresh air and sufficient humidity. So we should ever remain grateful to trees.

"Grow more trees, for beautiful Mother Earth, Grow more trees and get a happy life"

Laveesh Chelak
Class 6th "A"

संस्कृत विभाग

Sanskrit Department

साधूनां जीवनम

गङ्ग नद्या: तीरे एकः साधु: अस्ति। स: साधु बहु उपकारं करोति एकस्मिन दिने स: साधु: स्नानम करतु नदी गच्छति । नदी प्रवाहे एक: वृश्चिक: अस्ति। स: साधु: वृश्चिकम पश्यति। साधु: वृश्चिक: साधो हस्तम दशति। साधु: तम व्यजति । वृश्चिक: जले पतति। पुनः साधू: वृश्चिकम गृह्न्ति । स: तिरे स्थापयितुं पर्यत्नम करोति । पून: वृश्चिक: हस्तम दशति । एवम अनेकवारम भवति । साधु: वृश्चिकम गृह्न्ति । वृश्चिक: साधुम दशति । नदी तीरे एक: जन: अस्ति । स: एतत सर्व पश्यति । स: पृच्छति " साधु-महराज ! एषः वृश्चिक: दुष्ट: । स: पून: दशति भवान किमर्थ तम हस्तेन गृहड़ती ? वृश्चिकम व्यजतु " । तदा साधु: वदति " वृश्चिक: क्षुद्र: जन्तु: । दशनम तस्य स्वभाव: । स: स्वस्य स्वभावम न व्यजति । अहम तु मुनष्य: । अहं मम परोपकारम स्वभावम कथं व्यजामी ? य: अपकरिणाम उपकारं स: एव साधु: भवति ।

सुधांशी पटेल
कक्षा 8वी "ब"

Photograph

ऑनलाइन लॉटरी
बालवाटिका-3

ऑनलाइन लॉटरी
कक्षा-1ली

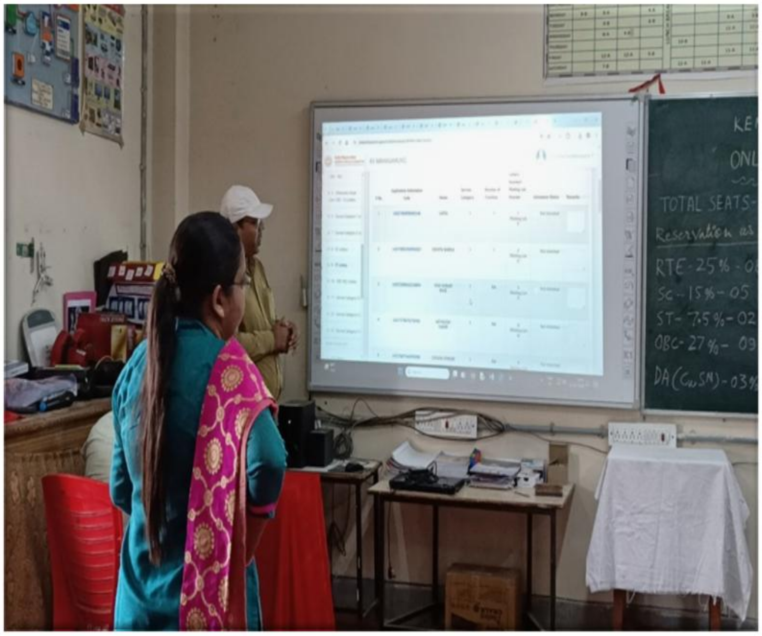

Online Adobe Training

Annual Sports Meet 2024-25

Aryabhatt Ganit Challenge Exam (08.10.2024)

Bag less Day

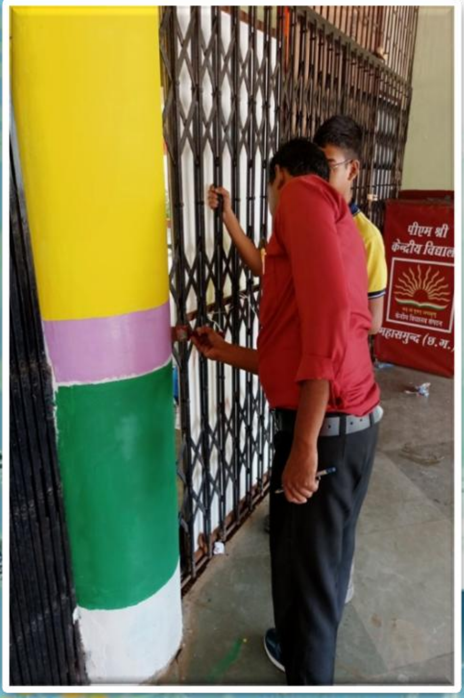

Thank
You